नवभारत
संस्थापक : स्व. रामगोपाल माहेश्वरी | प्रेरणा स्त्रोत : स्व. प्रफुल्ल माहेश्वरी

नेपाल त्रासदी : पर्यावरण संतुलन का बड़ा सबक

नेपाल में बुधवार को आई भीषण प्राकृतिक आपदा ने एक बार फिर हिमालय की संवेदनशीलता और वहां विकास के मौजूदा तौर-तरीकों पर गंभीर सवाल खड़े कर दिए हैं. रसुवा और नुवाकोट जिलों में ग्लेशियर का बड़ा हिस्सा टूटकर गिरने, उसके मलबे से लेंधे खोला का प्रवाह बाधित होने और फिर प्राकृतिक झील के अचानक टूटने से आई बाढ़ ने जिस तरह तबाही मचाई, वह केवल एक प्राकृतिक घटना नहीं, बल्कि हिमालय को लेकर हमारी विकास-दृष्टि पर पुनर्विचार का अवसर भी है. इस त्रासदी में बड़ी संख्या में लोगों की मौत और लापता होने की खबरें, सड़कों, पुलों, जलविद्युत परियोजनाओं और नेपाल-चीन व्यापार के महत्वपूर्ण केंद्र रसुवागढ़ी की तबाही इस खतरे की गंभीरता बताती है.

सबसे महत्वपूर्ण बात यह है कि ऐसी आपदाओं को केवल अतिवृष्टि या अचानक आई बाढ़ कहकर अपनी जिम्मेदारी से बचा नहीं जा सकता. हिमालय एक युवा और भूगर्भीय रूप से अत्यंत सक्रिय पर्वत श्रृंखला है. जलवायु परिवर्तन के कारण ग्लेशियरों के पिघलने और पीछे हटने की प्रक्रिया तेज हो रही है. इससे ग्लेशियर झीलों के बढ़ने और उनके अचानक फटने का खतरा भी बढ़ता है. इसके साथ यदि पहाड़ों की प्राकृतिक ढलानों को काटकर सड़कें बनाई जाएं, नदियों के किनारे बेतरतीब निर्माण हो, सुरंगों और जलविद्युत परियोजनाओं का विस्तार बिना समग्र भौगोलिक अध्ययन के किया जाए तो प्राकृतिक जोखिम कई गुना बढ़ सकता है.

भारत के लिए इसमें सबसे बड़ा सबक केदारनाथ की 2013 की त्रासदी का है. उस समय भी पर्यावरणविदों और वैज्ञानिकों ने चेताया था कि हिमालयी क्षेत्रों में विकास का मॉडल मैदानी इलाकों जैसा नहीं हो सकता. नदियों के प्राकृतिक प्रवाह क्षेत्र में निर्माण, ढलानों से अनावश्यक छेड़छाड़ और पर्यावरणीय क्षमता की अनदेखी अंततः भारी कीमत वसूल सकती है. केदारनाथ के बाद भी कई बार यही सवाल उठता रहा है कि हिमालय में विकास चाहिए, लेकिन किस कीमत पर.

इसका अर्थ यह नहीं कि पहाड़ों में सड़क, बिजली, संचार और पर्यटन का विकास रोक दिया जाए. सवाल विकास रोकने का नहीं, विकास का नजरिया बदलने का है. हिमालय में हर परियोजना के पहले वहां की वहन क्षमता, भूकंपीय संवेदनशीलता, ग्लेशियरों की स्थिति, ग्लेशियर झीलों और नदी के प्राकृतिक मार्ग का वैज्ञानिक अध्ययन अनिवार्य होना चाहिए. संवेदनशील क्षेत्रों का स्पष्ट जोनिंग किया जाए और अत्यधिक जोखिम वाले क्षेत्रों में निर्माण पर कठोर प्रतिबंध हो.

नेपाल की त्रासदी भारत के लिए भी चेतावनी है, क्योंकि हिमालय की नदियां सीमाओं को नहीं मानतीं. नेपाल से निकलने वाली नदियों का प्रभाव बिहार और उत्तर प्रदेश तक पहुंचता है. इसलिए भारत और नेपाल को साझा हिमालयी आपदा प्रबंधन तंत्र विकसित करना चाहिए. ग्लेशियरों और ग्लेशियर झीलों की संयुक्त निगरानी, रियल टाइम चेतावनी प्रणाली, नदी जलस्तर की तत्काल सूचना और सीमा पार आपदा प्रबंधन अभ्यास समय की मांग हैं. हिमालय हमारे लिए केवल पर्यटन और संसाधनों का क्षेत्र नहीं, बल्कि जल, पर्यावरण और जीवन का आधार है. उसे जितना समझेंगे, उतना ही सुरक्षित रहेंगे. पहाड़ों पर प्रकृति से मुकाबला करने की नहीं, उसके साथ चलने की विकास नीति ही भविष्य की त्रासदियों को रोकने का सबसे कारगर रास्ता है.

महाकौशल की डायरी

फिर चर्चा में नगर निगम की अफसरशाही

अविनाश दीक्षित

महाकौशल की सबसे बड़ी नगर निगम जबलपुर के गलियारों में इन दिनों अफसरशाही के खूब चर्चे हो रहे हैं. इस बार मामला प्रमोशन से जुड़ा है, जिसमें दोहरा रवैया अपनाए जाने का आरोप वरिष्ठ अधिकारियों पर लग रहा है.

दरअसल नगर निगम के तकरीबन आधा सैकड़ा चतुर्थ श्रेणी के कर्मचारी वर्षों से पदोन्नति की उम्मीद लगाए बैठे हैं. निगम आयुक्त और महापौर से मुलाकात कर इन कर्मचारियों ने अपनी वेदना से उन्हें अवगत भी कराया था. इसके उपरांत महापौर जगत बहादुर सिंह तथा निगम आयुक्त राम प्रकाश अहिरवार की रजामंदी से पदोन्नति प्रक्रिया शुरू भी कर दी गई, इससे कर्मचारी गदगद हो गए लेकिन उनकी यह खुशी अब काफूर हो गई है.

इसकी जो वजह सामने आ रही है वह यह है कि कर्मचारियों की पदोन्नति संबंधी फाइल बन तो गई हैं लेकिन वह टेबिल दर टेबिल घूम रही हैं, उसमें शीर्ष अफसर के हस्ताक्षर नहीं हो पा रहे हैं. कर्मचारी अपने विभाग प्रमुख से पूछताछ कर रहे हैं, मगर वह भी यह नहीं बता पा रहे हैं कि आखिर फाइल अटकी कहां पर हैं. इससे इतर दूसरा परिदृश्य यह है कि पदोन्नति के आकांक्षी अधिकारियों की फाइल न केवल तेजी से आगे बढ़ रही हैं बल्कि उनमें साइन भी

धड़ाधड़ हो रहे हैं. इस माजरे से क्षुब्ध चतुर्थ श्रेणी कर्मी अपनी समस्या जनप्रतिनिधियों के समक्ष भी रख चुके हैं परंतु वहां से भी कोई ठोस नतीजा उन्हें नहीं मिल सका.

विदित रहे कि वर्षों से पदोन्नति की प्रतीक्षा कर रहे चतुर्थ श्रेणी कर्मियों की लड़ाई न्यायालय में भी विचाराधीन है जिसकी सुनवाई सितंबर के पहले सप्ताह में होने वाली है. इसके चलते कर्मचारियों के बीच चिंता है कि यदि किसी वजह से न्यायालय ने दोबारा रोक लगा दी तो उन्हें फिर सालों तक प्रमोशन मिलने का इंतजार करना पड़ सकता है. फिलहाल नगर निगम के विभिन्न विभागों में आम जनों से संबंधित कामकाज से ज्यादा पदोन्नति सूची तैयार करने और इससे संबंधित फाइलों की खोजबीन ज्यादा हो रही है.

भोपाल को तवज्जो, मुख्यालय की उपेक्षा

प्रदेश का बिजली मुख्यालय शक्ति भवन जबलपुर में है किंतु इसको नियंत्रित भोपाल से किया जाता है, और इसी वजह से जबलपुर को दोयम दर्जे का बर्ताव झेलना पड़ रहा है. महाकौशल के केंद्र बिंदु होने के बावजूद जबलपुर के प्रत्येक क्षेत्र में रोजाना घंटों बिजली गुल होने की समस्या अनवरत बनी हुई है. इन हालातों के बीच भोपाल के औद्योगिक क्षेत्र मंडीदीप में 400 केवी फोर स्टेज जीआईएस सब स्टेशन स्थापना की तैयारी की चर्चा शक्ति भवन की गलियारों में गूंज रही है, जबकि जबलपुर की बढ़ती विद्युत जरूरत के मद्देनजर नए ट्रांसमिशन स्रोत तैयार करने के कई प्रस्ताव वर्षों से फाइलों की कैद से बाहर ही नहीं आ पा रहे हैं. संस्कारधानी के विजयनगर क्षेत्र के बढ़ते दायरे के मद्देनजर वर्ष 2019 में 132 केवी सब स्टेशन स्थापित करने की योजना बनाई गई थी, परंतु जमीन उपलब्ध नहीं हो पाने के कारण यह प्रस्ताव आज तक आगे नहीं बढ़ सका है. घनी आबादी वाले क्षेत्र बिजली आपूर्ति आज भी पूरी तरह से उखरी सब स्टेशन पर ही निर्भर बनी हुई है. वह भी चार दशक पुरानी व्यवस्था व विनोबा भावे सब स्टेशन तथा नयागांव सब स्टेशन से आने वाले सर्किटों पर टिकी है. इसी प्रकार विनोबा भावे से गोरा बाजार तक जाने वाले 33 केवी सर्किट को आधुनिक और उच्च क्षमता वाली लाइन में परिवर्तित करने का प्रस्ताव भी लंबे समय से प्रतीक्षा में है, जो अब तक धरातल पर नहीं उतर सका है. पिछले लगभग 15 वर्षों में जबलपुर शहर के लिए किसी भी नए एक्स्ट्रा हाईटेंशन सब स्टेशन की गंभीर जरूरत पर अपेक्षित स्तर पर कार्य नहीं हो पाया है. पुरानी ट्रांसमिशन व्यवस्था पर लगातार बढ़ रहा यह दबाव बिजली आपूर्ति के लिए एक बड़ी चुनौती बन सकता है. फिलहाल बिजली वितरण कंपनी का मुख्य जोर राजस्व वसूली, स्मार्ट मीटर लगाने और बिजली चोरी रोकने जैसे कार्यों पर अधिक है, जबकि जबलपुर वासी रोज हो रहे फाल्ट की समस्या झेलने के लिए मजबूर हैं.

शास्त्र, विज्ञान और संस्कृति का संगम संस्कृत

योगेश कुमार गोयल

विश्व संस्कृत दिवस पर विशेष

आज जब मानवता जलवायु संकट, सांस्कृतिक विघटन, युद्ध और मानसिक तनाव के दौर से गुजर रही है, संस्कृत हमें 'वसुधैव कुटुम्बकम्', 'सर्वे भवन्तु सुखिनः' और 'एकं सद्विप्रा बहुधा वदन्ति' जैसे सार्वभौमिक और समन्वयकारी विचार देती है. हालांकि यह संतोष का विषय है कि संस्कृत को पुनः जीवंत करने के लिए प्रयास हो रहे हैं और पुनरुद्धार की संभावना इसमें सबसे अधिक है. बावजूद यह भी कटु सत्य है कि यदि आज हम जागरूक नहीं हुए तो कहीं आने वाली पीढ़ियों के लिए यह भाषा केवल संग्रहीत स्मृति बनकर न रह जाए. इसलिए यह आवश्यक है कि हम संस्कृत को केवल उत्सवों तक सीमित न रखें बल्कि इसे जीवन में उतारें. तभी यह दिव्य भाषा पुनः भारत की आत्मा बनकर केवल इस देश में नहीं बल्कि सम्पूर्ण मानवता के लिए प्रकाश स्तंभ बन सकेगी.

प्रतिवर्ष श्रावण मास की पूर्णिमा को 'विश्व संस्कृत दिवस' मनाया जाता है. इस वर्ष 28 अगस्त को मनाया जा रहा यह दिवस भारत की उस सनातन संस्कृति, ज्ञान, विचार और वैदिक परंपरा का स्मरण और सम्मान है, जो सदियों से इस राष्ट्र की आत्मा में संचित है. संस्कृत केवल ग्रंथों तक सीमित नहीं रही बल्कि समूची भारतीय ज्ञान परंपरा की मूलधारा रही है.

वैदिक ऋचाओं से लेकर दर्शन, चिकित्सा, गणित, खगोलशास्त्र, संगीत, धर्म, साहित्य और नीति तक को संस्कृत पालती रही है. संस्कृत दिवस का उद्देश्य संस्कृत भाषा को फिर से जीवंत करने, संरक्षण देने और वैश्विक मंचों पर इसके महत्व को रेखांकित करने का सामूहिक प्रयास भी है. भारत सरकार के शिक्षा मंत्रालय ने 1969 में हर वर्ष श्रावणी पूर्णिमा को 'संस्कृत दिवस' के रूप में मनाए जाने की परंपरा आरंभ की थी. यह वही दिन है, जब प्राचीन भारत में गुरुकुलों में नए शिक्षण सत्र का आरंभ होता था और शास्त्रों के पठन-पाठन की विधिवत शुरुआत होती थी.

संस्कृत विश्व की प्राचीनतम ज्ञात भाषाओं में से एक है, जिसकी जड़ें 3500-4000 वर्ष पूर्व तक जाती हैं. व्याकरण का अद्भुत ग्रंथ 'अष्टाध्यायी', जिसे पाणिनि ने रचा, आज भी भाषा विज्ञानियों को चकित करता है. वर्ष 1985 में अमेरिकी वैज्ञानिक रिक ब्रिग्स ने अपने शोध में यह निष्कर्ष निकाला कि संस्कृत भाषा का व्याकरणीय ढांचा कंप्यूटर प्रोग्रामिंग के लिए सर्वोत्तम अनुकूलता रखता है. भारतीय संविधान की 8वीं अनुसूची में संस्कृत को मान्यता प्राप्त है और उत्तराखंड ने इसे अपनी द्वितीय राजभाषा घोषित किया है. संस्कृत केवल शास्त्रों की भाषा नहीं रही बल्कि आज भी देश के कई गांवों में जीवंत है. कर्नाटक के शिमोगा जिले का मत्तूर गांव इसका उत्कृष्ट उदाहरण है, जहां 9500 से अधिक लोगों की मातृभाषा संस्कृत है. यहां बच्चे संस्कृत में शिक्षा लेते हैं, घरों में संस्कृत में संवाद होता है और समाज का समूचा व्यवहार इसी भाषा में संचालित होता है. मध्यप्रदेश के राजगढ़ जिले के झिरी गांव में तो हिंदू ही नहीं, मुस्लिम परिवार भी संस्कृत में संवाद करते हैं, यहां की दीवारें संस्कृत श्लोकों से सजी हुई हैं और विवाह के गीत तक संस्कृत में गाए जाते हैं. ओडिशा का सासन गांव, जहां केवल 300 की आबादी है, वहां हर व्यक्ति संस्कृत बोलता है. राजस्थान के बांसवाड़ा जिले का गनोड़ा गांव तथा मध्यप्रदेश का बघुवार गांव भी इसी श्रृंखला में आते हैं, जहां संस्कृत भाषा बच्चों के माध्यम से पुनर्जीवित हो रही है.

भारत के बाहर भी संस्कृत के प्रति जिज्ञासा और श्रद्धा निरंतर बढ़ रही है. जर्मनी के 14 से अधिक विश्वविद्यालयों में संस्कृत पढ़ाई जाती है. हार्वर्ड, ऑक्सफोर्ड, कैम्ब्रिज, शिकागो, टोक्यो और ऑस्ट्रेलियन नेशनल यूनिवर्सिटी जैसे प्रतिष्ठित संस्थानों में संस्कृत साहित्य, व्याकरण, भारतीय दर्शन और धर्मशास्त्रों के पाठ्यक्रम उपलब्ध हैं. 2024 में जारी नई डिजिटल शिक्षा नीति में संस्कृत को प्राथमिक स्तर पर वैकल्पिक भाषा के रूप में अनिवार्य करने की अनुशंसा की गई. कई राज्यों में ऑनलाइन संस्कृत कोर्स, मोबाइल ऐप्स, संस्कृत संवाद कार्यशालाएं, श्लोक प्रतियोगिताएं और संस्कृत नाट्य मंचन जैसे आयोजन किए जा रहे हैं.

तकनीक के क्षेत्र में भी संस्कृत ने अपनी उपस्थिति दर्ज कराई है. एआई और एनएलपी जैसी उन्नत तकनीकों में संस्कृत की स्पष्टता और व्याकरणिक शुद्धता इसे अन्य भाषाओं की तुलना में अधिक उपयुक्त बनाती है. आईआईटी मुंबई, आईआईआईटी हैदराबाद और बीएचयू जैसे संस्थान संस्कृत आधारित कंप्यूटेशनल प्रोजेक्ट्स पर कार्य कर रहे हैं. संस्कृत में केवल धार्मिक या दार्शनिक साहित्य ही नहीं, चिकित्सा, वनस्पति, गणित, खगोलशास्त्र, सैन्यशास्त्र और धातुकर्म जैसे विषयों पर भी विस्तृत ग्रंथ उपलब्ध हैं. नासा और अन्य वैश्विक संस्थाएं संस्कृत ग्रंथों में छिपे वैज्ञानिक ज्ञान को नए संदर्भों में समझने के लिए निरंतर प्रयासरत हैं.

(लेखक वरिष्ठ पत्रकार हैं)

कैसे दूर की जाए सड़कों की दुर्दशा?

देश की सड़कें निर्माण के कुछ समय बाद ही ऊबड़-खाबड़ क्यों हो जाती हैं? लखनऊ-कानपुर एक्सप्रेस वे उद्घाटन के 13 दिन बाद ही उसमें गड्ढे व दरारें सामने आ गईं. 12,000 करोड़ की लागत से बना दिल्ली-देहरादून एक्सप्रेस वे भी 3 माह में खराब हो गया. उद्घाटन के पहले सड़क की मजबूती क्यों नहीं जांची-परखी जाती? जब निर्माण कार्य अधूरा या दोषपूर्ण है, तो उद्घाटन क्यों किया जाता है? ऐसे ठेकेदारों को ब्लैक लिस्ट में क्यों नहीं डाला जाता, जो घटिया दर्जे का काम करते हैं? क्या नेता, अधिकारी, इंजीनियर व ठेकेदार की मिलीभगत सरकारी धन की बंदरबांट कर रही है? यदि ठेकेदार पर दबाव हो कि 2-4 साल बाद भी सड़क खराब होने पर उसे जिम्मेदार माना जाएगा, तो वह निर्माण सही तरीके से करेगा. तब वह रेत व सीमेंट के सही मिश्रण, फाउंडेशन, कॉम्पैक्शन, ड्रेनेज का पूरा ध्यान रखकर जिम्मेदारी से सड़क बनाएगा. विदेश में सड़क निर्माण की वारंटी कानूनी तौर पर परिभाषित रहती है तथा सख्ती से लागू की जाती है. जर्मनी व ऑस्ट्रेलिया में सड़क का निष्पक्ष ऑडिट किया जाता है. एक अन्य समस्या यह भी है कि भारत की सड़कें भारी बारिश होने पर जलमग्न होकर नदी का रूप ले लेती

क्या नेता, अधिकारी, इंजीनियर व ठेकेदार की मिलीभगत सरकारी धन की बंदरबांट कर रही है? यदि ठेकेदार पर दबाव हो कि 2-4 साल बाद भी सड़क खराब होने पर उसे जिम्मेदार माना जाएगा, तो वह निर्माण सही तरीके से करेगा.

हैं और गर्मी के मौसम में बहुत ज्यादा तप जाती हैं. सीमेंट की सड़कें तो बहुत ही गर्म हो जाती हैं. इसे नगर नियोजनकर्ताओं को देखना होगा कि पानी के बहाव को देखते हुए ड्रेनेज की पर्याप्त व्यवस्था रहे. कुछ जमीन ऐसी खुली छोड़ी जाए, जो पानी सोख सके. यदि हर जगह सीमेंट कंक्रीट की सड़कें रहेंगी और पानी की निकासी का रास्ता नहीं रहेगा, तो सड़कें जलमग्न होती रहेंगी. जहां बाढ़ का ज्यादा खतरा है वहां ड्रेनेज की क्षमता बढ़ाई जानी चाहिए. यदि हरियाली बढ़ाई जाए व सड़क के दोनों किनारे पर पेड़ लगाए जाएं तो गर्मी व धूल की समस्या कम हो सकती है.

निशानेबाज

हाथ में गंगाजल ले खाई कसम, बांटेंगे करप्शन का कमीशन

पड़ोसी ने हमसे कहा, 'निशानेबाज, कितनी विचित्र बात है कि उत्तर प्रदेश के शाहजहांपुर की नगर निगम के विकास कार्यों से जुड़े सभी 60 पार्षदों ने हाथ में गंगाजल लेकर शपथ ली कि वह निगम से मिलने वाले अवैध कमीशन को आपस में बराबर बांटेंगे. बेईमानी और भ्रष्टाचार करने के लिए भी गंगा की सौगंध लेने में इन लोगों को तनिक भी संकोच नहीं हुआ.'

हमने कहा, 'चोरों में भी चोरी का माल आपस में बांटने के मामले में ईमानदारी रहती है. लोगों को चमड़े के कारखाने का दूषित पानी और शहरों का सीवेज गंगा में बहाते हुए शर्म नहीं आती, तो यह पार्षद तो मामूली भुट्टे चोर हैं. यह कलियुग है, जिसमें राम के नाम का चंदा चुराया जाता है और हथेली में गंगाजल लेकर करप्शन की काली कमाई आपस में बराबरी से बांटने की शपथ ली जाती है.'

पड़ोसी ने कहा, 'निशानेबाज, यह लोग अपना पाप कहां जाकर भुगतेंगे? गंगा विश्व की पवित्रतम नदी मानी जाती है. लोग श्रद्धापूर्वक गंगाजल कांवड में लाकर शिव का अभिषेक

करते हैं. जीवन के अंतिम क्षण में व्यक्ति के मुख में तुलसी का पत्ता और गंगाजल डाला जाता है. गंगा से हर भारतवासी की श्रद्धा, भावना जुड़ी है. याद कीजिए कि जब गुजरात से आए प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने उत्तर प्रदेश से नाता जोड़ने की ठानी थी, तो वाराणसी लोकसभा चुनाव लड़ते समय उन्होंने कहा था- मैं यहां नहीं आया, मुझे तो मां गंगा ने बुलाया है! गंगा को लेकर कितनी ही फिल्में बनी हैं जिनके नाम हैं- जिस देश में गंगा बहती है, गंगा की लहरें, गंगा की सौगंध, गंगा मैया तोहे पियरी चढ़इबो, गंगा-जमुना. अमिताभ बच्चन पर गीत फिल्माया गया था-छोरा गंगा किनारे वाला! एक और गीत है-गंगा तेरा पानी अमृत, कल-कल बहता जाए!'

हमने कहा, 'गंगा की सफाई के नाम पर नमामि गंगे प्रोजेक्ट पर करोड़ों रुपये का कागजी खर्च दिखाया गया, लेकिन गंगा स्वच्छ नहीं हुई. गंगा सुरसरी या देवताओं की नदी कहलाती है. पुराणों के अनुसार वह भगवान विष्णु के चरणों से निकली. राजा सगर, उनके पुत्र अंशुमान के बाद पौत्र भगीरथ के तप से गंगा स्वर्ग से पृथ्वी पर आई. उसका तीव्र वेग कम करने के लिए शिव ने अपनी जटाओं में गंगा को धारण किया. इसलिए वह गंगाधर भी कहलाए. गंगादीन, गंगाप्रसाद नाम भी आपने सुने होंगे. यूपी में लोग गंगा नदी को आदरपूर्वक गंगाजी कहते हैं.'

संपादकीय बोर्ड | प्रबंध संपादक : सुमीत माहेश्वरी, समूह संपादक : क्रांति चतुर्वेदी

शब्द-सागर 12362

- डॉ. सागर खादीवाला

निश्चित लंबाई का टुकड़ा, स्थान 3. बाल (सं.) 4. आकाश, पृथ्वी और स्वर्ग के बीच का स्थान (सं.) 5. बाग में पौधों आदि की देखभाल करने वाला व्यक्ति 7. आतिथ्य करने वाला, भोजन का निमंत्रण देने वाला 9. प्रेम, कामदेव की स्त्री का नाम जो रति की सौत थी 10. संगीत में सात स्वरों का राग सहित उच्चारण, तान 11. मोमबत्ती 12. प्राण, जान, प्राणी 15. विधि के अनुसार पति-पत्नी का संबंध त्याग 16. मंजूरी 17. नाड़ी 18. जिस समय 20. कपड़ा आदि बनाने का बड़ा कारखाना (अं.) 21. जंगल

बाएं से दाएं
2. धरोहर, संचित धन, अमानत 4. सूर्य (सं.) 6. विष्णु (सं.) 8. सूत कातने के उपयोग में आने वाली सलाई, टेकुरी 10. बारूद निर्मित खिलौनों के जलने का दृश्य, अग्निक्रीड़ा 13. समय का सबसे छोटा मान, पल का चौथाई भाग 14. मनुष्य, मनुष्य जाति 15. तपस्या करने वाला 17. जुकाम 19. छोटा कीड़ा, हिरमिजी कीड़ा (सं.) 22. पाठ, शिक्षा, नसीहत, एक दिन में गुरु द्वारा पढ़ाया हुआ पाठ का भाग 23. फसल के रूप में बोए जाने वाले तेल के पौधे

ऊपरे से नीचे
1. पलाश (सं.) 2. कपड़े आदि का

Solution 12361

हि	र	ण्य	ग	र्भ		ल	प
मा	त		ढ़		प	ट	ना
च्छा		अ		पा	ट		
दि	या	स	ला	ई		गु	फा
त		ह	ठी			ल	
	छे	नी		नी	ल	कं	ठ
	द	य	नी	य		द	न
चै	न		चा	त	क		क

ज्योतिषाचार्य पंडित प्रियंका नारायणशंकर व्यास, कोतवाली बाजार, जबलपुर (म.प्र.)

आज जिनका जन्मदिन है

वर्ष के प्रारंभ में शासन संबंधी कार्यों में व्यस्तता रहेगी. व्यर्थ के भागदौड़ से शारीरिक कष्ट होगा. शिक्षा में अरूचि व्यवधान आयेगा. वर्ष के मध्य में सामाजिक स्थिति में सुधार होगा. आय में वृद्धि होगी. राजनैतिक लाभ का योग है. वर्ष के अन्त में निर्धारित कार्यों में सफलता मिलेगी. कर्मचारियों के सहयोग से आंशिक लाभ होगा.

मेष और वृश्चिक राशि के व्यक्तियोंको स्थान परिवर्तन का योग है. मित्रों से सहयोग प्राप्त होगा. वृष और तुला राशि के व्यक्तियों को पारिवारिक चिन्ता रहेगी. शिक्षा में व्यवधान आयेगा. कर्क राशि के व्यक्तियोंको रचनात्मक कार्योंमें सफलता मिलेगी. धार्मिक कार्यो मेंव्यय होगा. सिंह राशि के व्यक्तियों को शिक्षा में अरूचि रहेगी. व्यवधान पैदा होगा. मिथुन और कन्या राशि के व्यक्तियों को शासन संबंधी कार्यो में व्यस्तता रहेगी. धनु और मीन राशि के व्यक्तियों के पूर्व निर्धारित कार्यो में सफलता मिलेगी. मकर और कुंभ राशि के व्यक्तियोंको सामाजिक कार्यो में योगदान देना पड़ेगा.

आज जन्मे शिशु का भविष्य

आज जन्म लिया बालक बुद्धिमान, उदारहृदय का परोपकारी होगा. साहित्य एवं कला में विशेष योग्यता रहेगी. एक बार जो निर्णय कर लेगा, उसी पर अटल रहेगा. भाग्यवान एवं सहनशील रहेगा. हर कार्य को दिल से करेगा. माता पिता का भक्त होगा.

उदयकालीन ग्रह चाल

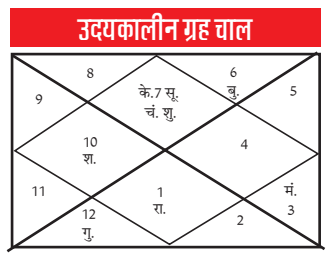

पंचांग

रा.मि. 06 संवत् 2083 श्रावण शुक्ल पूर्णिमा भृगुवासरे दिन 9/19, शतभिषा नक्षत्रे रात 4/1, अतिगण्ड योगे दिन 9/11, वव करणे सू.उ. 5/41, सू.अ. 6/19, चन्द्रचार कुम्भ, पर्व- स्नानदान पूर्णिमा, रक्षाबन्धन, राखी, शु.रा. 11, 1, 2, 5, 6, 8 अ.रा. 12, 3, 4, 7, 9, 10 शुभांक- 4, 6, 0.

व्यापार भविष्य

श्रावण शुक्ल पूर्णिमा को शतभिषा नक्षत्र के प्रभाव से सोना, चांदी, ऊनी वस्त्र, हैसियन, खांड में तेजी होगी. आज 12 बजकर 2 मिनिट के रूख पर व्यापार करना लाभकारी रहेगा. भाग्यांक 5484 है.

मेष- दुविधा की स्थिति में वृषभे बढ़ने में मुश्किल हो सकती है, कार्य विस्तार की रूपरेखा बनेगी, आध्यात्मिक एवं रचनात्मक कार्यों में रूचि रहेगी.

वृषभ- अपने रिश्तों को थोड़ा वक्त दें, राह की उलझन दूर होगी, रक्त विकार उदर विकार से बचें, खानपान पर संयम रखें, बाहरी व्यक्ति पर भरोसा न करें.

मिथुन- मानसिक तनाव के चलते अशांति बनी रहेगी, व्यापारिक सौदे लाभदायी हो सकते हैं. परिश्रम की अधिकता रहेगी, आमोद-प्रमोद के साधनों में वृद्धि होगी.

कर्क- न चाहते हुये भी समझौता करना पड़ सकता है, कानूनी मामलों में दूसरों की सलाह से वृषभे बढें. न्यायालयीन प्रयासों में सफलता मिलेगी, अतिथि आगमन का योग है.

सिंह- दूसरों की सलाह से वृषभे बढ़ें, सफलता मिलेगी, शिक्षा संतान के कार्यों में सफलता मिलेगी, शत्रु वर्ग पर विजय प्राप्त होगी. भय एवं तनाव दूर होगा.

कन्या- परिणय की चर्चाओं में सफलता मिल सकती है, बिगड़े कार्य को पूरा करने में परेशानी होगी, जोखिम के कार्यों में विशेष सावधानी रखें, अत्यन्त व्यस्तता रहेगी.

तुला- नजदीकी लोगों के कारण मन परेशान रहेगा. श्रम एवं प्रयास से महत्वपूर्ण काम बनेगा, शत्रुओं का पराभव होगा, आमोद-प्रमोद के साधनों में वृद्धि होगी.

वृश्चिक- पारिवारिक आयोजन सुखद रहेगा, भाग्य से अच्छे अवसर आ सकते हैं, नवीन योजनाओं की रूपरेखा बनेगी, वास्ते सावधानी रखें. स्वास्थ्य नरम गरम रहेगा.

धनु- परिचितों के कारण काम में मुश्किल आयेगी, दुविधा की स्थिति से बाहर निकलें लाभ होगा. शारीरिक सुख एवं मानसिक प्रसन्नता रहेगी.

मकर- अपनी की गई गलती का खामियाजा भुगतना पड़ सकता है, सामाजिक जीवन में मान-सम्मान बढ़ेगा. सोचे कार्य बनने का योग है.

कुम्भ- कैरिअर में उतार-चढ़ाव बना रहने से चिन्ता बढ़ेगी, जमकर जायजाद के कार्यों में लाभ होगा, धार्मिक यात्रा होगी, रूके कार्य बनने का योग है, प्रसन्नता रहेगी.

मीन- बिखरे कार्यों को समेटने में परिवार की अच्छी मदद मिलेगी, किसी की जवाबदारी न लें, नौकरी पदोन्नति एवं स्थानांतरण की समस्या का समाधान होगा.

SUDOKU 7494

5	9			3			8	7
8	7		1		5			
		2			9			4
	6				2		3	5
3	8		4	1	7		2	9
2	4		6				1	
7			3			8		
			5		8		7	3
9	3			2			6	1

▫ प्रत्येक पंक्ति में 1 से 9 तक के अंक भरे जाने आवश्यक है. इनका क्रमवार होना आवश्यक नहीं है. आड़ी और खड़ी पंक्ति में एवं 333 के वर्ग में किसी भी अंक की पुनरावृत्ति न हो इसका विशेष ध्यान रखें. ▫ पहले से मौजूद अंकों को आप हटा नहीं सकते. ▫ पहेली का केवल एक ही हल है.

नवभारत सू-दोकू 7493

7	4	8	3	9	2	1	5	6
2	6	9	5	7	1	8	4	3
3	1	5	4	8	6	7	2	9
5	7	4	8	6	9	3	1	2
8	9	1	2	3	4	6	7	5
6	3	2	1	5	7	4	9	8
4	8	7	6	2	5	9	3	1
9	2	6	7	1	3	5	8	4
1	5	3	9	4	8	2	6	7